संतों के सद्वचन

कबीर के दोहे

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय॥

प्रस्तुत पक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तिका 'मंथन' भाग - 6 संतों के सद्वचन पाठ से ली गई है। संतों की वाणी वह औषधि है जो हमारे चरित्र के विकारों को दूर करती है और हमें एक उत्तम मनुष्य बनने में मदद करती है। यह हमें सांसारिक और नैतिक मूल्यों की भी अच्छी समझ देती है।

प्रस्तुत दोहे में कबीर कहते हैं कि निंदा करने वाले व्यक्ति को आंगन में कुटिया बनाकर निकट में रखना चाहिए। क्योंकि वह बिना पानी और साबुन के भी व्यक्ति के स्वभाव को निर्मल बना देता है।

पोथी पढ़ि - पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोई।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होई॥

संसार के प्राणी पोथी पढ़ - पढ़कर दिवंगत हो जाते हैं. परन्तु कोई पण्डित नहीं बन पाता, जो व्यक्ति ढाई अक्षर से निर्मित प्रेम का पाठ पढ़ता है, वह पण्डित या ज्ञानी बनता है अर्थात् प्रेम का जो वास्तविक रूप जान लेता है, वही सच्चा ज्ञानी होता है।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप॥

कबीर दास कहते हैं कि अत्यधिक बातें करना भी अच्छा नहीं और अत्यधिक चुप रहना भी ठीक नहीं। अत्यधिक वर्षा होना भी ठीक नहीं और अत्यधिक धूप होना भी अच्छा नहीं है।

रहीम के दोहे

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरौ चटकाइ।
टूटे से फिर न जुरै, जुरै गाँठ परि जाइ॥

रहीम जी कहते हैं कि क्षणिक आवेश में आकर प्रेम रूपी नाजुक धागे को कभी नहीं तोड़ना चाहिए। क्योंकि एक बार धागा टूट जाये तो पहले जुड़ता नहीं और अगर जुड़ भी जाए तो उसमें गांठ पड़ जाती है।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, सो ही साँचे मीत॥

धन सम्पत्ति यदि हो, तो अनेक लोग सगे-संबंधी बन जाते हैं। पर सच्चे मित्र तो वे ही हैं, जो विपत्ति की कसौटी पर कसे जाने पर खरे उतरते हैं। सोना सच्चा है या खोटा, इसकी परख कसौटी पर घिसने से होती है। इस प्रकार विपत्ति में जो हर तरह से साथ देता है, वही सच्चा मित्र है।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग॥

रहीम कहते हैं कि जो अच्छे स्वभाव के मनुष्य होते हैं, उनको बुरी संगति भी बिगाड़ नहीं पाती, जहरीले सांप चन्दन के वृक्ष से लिपटे रहने पर भी उस पर कोई जहरीला प्रभाव नहीं डाल पाते।

तुलसी के दोहे

देखत ही हरषै नहीं, नैनन नहीं सनेह।
तुलसी वहाँ न जाइए, कंचन बरसे मेह ॥

तुलसीदास जी कहते हैं जिस स्थान या घर में आपके जाने से लोग खुश नहीं होते हो और उन लोगों की आँखों में आपके लिए न तो प्रेम और न ही स्नेह हो, वहाँ हमें कभी नहीं जाना चाहिए, चाहे वहाँ धन की ही वर्षा क्यों नहीं हो।

दया धरम का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छाँड़िए, जब लोग घट में प्राण ॥

तुलसीदास कहते हैं कि धर्म का मूलमंत्र दया है और पाप अभिमान की जड़ है। व्यक्ति को किसी भी स्थिति में दया का परित्याग नहीं करना चाहिए। जब तक शरीर में प्राण विद्‌मान है तब तक दया करती रहनी चाहिए।

तुलसी पावस के समय, धरी कोकिल मौन।
अब तो दादुर वक्ता भए, हमहिं पूछे कौन ॥

बारिश के मौसम में मेंढको के टर्राने की आवाज इतनी अधिक हो जाती है कि कोयल की मीठी बोली उस कोलाहल में बंद हो जाती है। इसलिए कोयल मौन धारण कर लेती है। यानि जब मेंढक रूपी धूर्त व कपट पूर्ण लोगों का बोलबाला हो जाता है तब समझदार व्यक्ति चुप ही रहता है और व्यर्थ ही अपनी उर्जा नष्ट नहीं करता।

संत समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोय।
सुत दारा अरु लक्ष्मी, पापी के भी होय॥

तुलसीदास कहते हैं कि संतों की भेंट बड़ी कठिनाई से होती है और हरि की कथा का प्रवचन बड़ी कठिनाई से सुनने को मिलती है। दोनों बातें बड़ी दुर्लभ हैं। पुत्र, पत्नी और धन ये तो पापियों को भी मिल जाती हैं।

अभ्यास

मौखिक

(क) आँगन में कुटी बनाकर किसे रखना चाहिए?
आँगन में कुटी बनाकर निंदक को रखना चाहिए।

(ख) कबीर ने किस-किस की अति को अच्छा नहीं कहा है?
कबीर ने अत्यधिक बातें करना, चुप रहना, वर्षा होना तथा धूप होना को अच्छा नहीं माना है।

(ग) व्यक्ति के पास संपत्ति होने पर किस प्रकार के लोग उसके मित्र बन जाते हैं?
व्यक्ति के पास संपत्ति होने पर स्वार्थी लोग उसके मित्र बन जाते हैं।

(घ) तुलसी ने अभिमान को पाप का मूल क्यों कहा है?
अभिमानी होने पर मनुष्य अनेक प्रकार का पाप कर्म करता है, इसलिए तुलसी ने अभिमान को पाप का मूल कहा है।

(ङ) तुलसी के अनुसार बरसात में कोयल क्यों चुप हो जाती है?
बारिश के मौसम में मेंढकों के टर्राने की आवाज इतनी अधिक हो जाती है कि कोयल की मीठी बोली उस कोलाहल में बंद हो जाती है।

(च) तुलसी के अनुसार क्या दुर्लभ है?

तुलसी के अनुसार संतों की भेंट और हरि की कथा का प्रवचन का श्रवण बहुत ही दुर्लभ है।

लिखित

(क) कबीर प्रेम के कितने अक्षर बताते हैं?

कबीर प्रेम के ढाई अक्षर बताते हैं।

(ख) रहीम क्या न तोड़ने की सलाह देते हैं?

रहीम प्रेम रूपी नाजुक धागे को नहीं तोड़ने की सलाह देते हैं।

(ग) चंदन वृक्ष पर सर्प लिपटे रहने पर भी उसमें विष का असर नहीं होता – यह किसने कहा है?

चंदन वृक्ष पर सर्प लिपटे रहने पर भी उसमें विष का असर नहीं होता – यह रहीम ने कहा है।

(घ) दया को धर्म का मूल किसने बताया है?

दया को धर्म का मूल तुलसीदास ने बताया है।

(ङ) सावन के महीने में कौन वक्ता बन जाता है?

सावन के महीने में दादुर [मेढ़क] वक्ता बन जाता है।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

(क) कबीर ने निंदा करने वाले को समीप रखने को क्यों कहा है?

कबीर ने निंदा करने वाले व्यक्ति को आंगन में कुटिया बनाकर निकट में रखना चाहिए। क्योंकि वह बिना पानी और साबुन के भी व्यक्ति के स्वभाव को निर्मल बना देता है। इसलिए कबीर ने निंदा करने वाले व्यक्ति को समीप रखने को कहा है।

(ख) 'ढाई आखर प्रेम का' का क्या अर्थ है?

'ढाई आखर प्रेम का' जो पाठ पढ़ता है, वही पण्डित या ज्ञानी बनता है। अर्थात् प्रेम का जो वास्तविक रूप जान लेता है, वही सच्चा ज्ञानी होता है।

(ग) परस्पर प्रेम का धागा टूट जाने का क्या परिणाम होता है?

रहीम जी कहते हैं कि क्षणिक आवेश में आकर प्रेम रूपी नाजुक धागे को कभी नहीं तोड़ना चाहिए क्योंकि एक बार धागा टूट जाये तो पहले जुड़ता नहीं और अगर जुड़ भी जाए तो उसमें गांठ पड़ जाती है।

(घ) रहीम ने सच्चा मित्र किन्हें कहा है?

विपत्ति में जो हर तरह से साथ देता है, रहीम ने उन्हें सच्चा मित्र कहा है।

(ङ) रहीम ने चंदन वृक्ष के साथ सर्प के लिपटे रहने का उदाहरण किस बात को सिद्ध करने के लिए दिया है?

रहीम कहते हैं जो अच्छे स्वभाव के मनुष्य होते हैं, उनको बुरी संगति भी बिगाड़ नहीं पाती, जहरीले सांप चन्दन के वृक्ष से लिपटे रहने पर भी उस पर कोई जहरीला प्रभाव नहीं डाल पाते।

1. सही उत्तर पर सही [✓] का निशान लगाइए -

(क) औषधि

(ख) निंदा करने वाला

(ग) अक्षर

(घ) मेढ़क

2. 'हाँ' या नहीं में उत्तर दीजिए -

(क) हाँ

(ख) नहीं

(ग) नहीं

(घ) नहीं

(ङ) हाँ